[Dr. P. Subbarayan.] women and I hope they will stand by their pledge of equality of status and place the men in the same position as they want themselves placed.

And, also, Sir, Dr. Kane referred to the father being put in category two instead of category one along with the mother. I also feel that this is an injustice done to the mere man, as they would like to call him. I do feel that they should be reformed. I have stood for social reform for well nigh fortyfive years today. At the same time. I cannot stand for inequality whigh is being perpetrated by this Bill and I hope the hon. Minister in charge of this Bill will think of it. What is more, the Bill has got right out of shape and I do not think my learned friend, Mr. Biswas, recognizes the child that he produced and I think it was the right of some Members to point out that the Bill should have been circulated for eliciting public opinion, because if you make such drastic changes against the principles of the Bill which you have brought forward, I think it is only right that the public should have a right to say what they feel about the changes that have been brought about.

[MR. CHAIRMAN in the Chair.]

I hope, Sir, that the hon. Minister for Legal Affairs will consider these points and accept proper amendments necessary to make the equality of men and women a reality and not a shadow as it is in this Bill.

MR. CHAIRMAN: Mr. Amolakh Chand.

REPORT OF JOINT COMMITTEE OF THE HOUSES ON THE CITIZENSHIP BILL, 1955

SHRI AMOLAKH CHAND (Uttar Pradesh): Sir, I beg to lay on the Table a copy of the Report of the Joint Committee of the Houses on the Bill to provide for the acquisition and termination of Indian citizenship.

THE HINDU SUCCESSION BILL, 1954.—continued

श्री रामधारी सिंह दिनकर (बिहार) : श्रीमन्, जिस विधेयक पर हम लोग विचार कर रहे हैं वह बड़ा ही क्रान्तिकारी विधेयक है और मैं समझता हूं कि प्रत्येक सदस्य के मन में यह भाव होगा कि इस विधेयक पर हम गम्भीरता से विचार करें, विवेक से विचार करें। लेकिन, मैं एक चेतावनी और दूं कि गम्भीरता कहीं इतनी बड़ी न हो जाय कि हम कायर हो जायं। इसलिए मेरा निवेदन है कि इस विधेयक पर विचार करते समय गम्भीरता से अधिक निर्भयता चाहिए, बुद्धि से अधिक उदारता चाहिए।

मैं मानता हूं कि यह विधेयक भारतीय परम्परा में भयानक परिवर्तन उत्पन्न करने वाला है। लेकिन, यह परिवर्तन किसी व्यक्ति विशेष का लाया हुआ नहीं है, न किसी दल विशेष का लाया हुआ है, न सरकार ही कोशिश कर के इस परिवर्तन को रोक सकती है और न उन लोगों की कोशिशों से यह परिवर्तन रुकने वाला है जो झंडे निकाल निकाल कर देश में जलूस तैयार करते हैं और लोगों को यह समझाते हैं कि यह सरकार नास्तिक है, परम्परा और संस्कृति का खंडन करने वाली है। परिवर्तन इसलिए आ रहा है कि देश स्वाधीन हुआ है, परिवर्तन इसलिए आ रहा है कि देश में औद्योगिक क्रान्ति हो रही है, परिवर्तन इसलिए आ रहा है कि जिस परम्परा को हम अब तक निभाते आ रहे थे, वह टूटने जा रही है और उस परम्परा के टूट जाने पर पुराने नियम, पुरानी संस्कृति हमारे किसी काम आने वाले नहीं हैं। अगर कोई आदमी यह समझता है कि देश में राजनैतिक क्रान्ति तो हो, औद्योगिक क्रान्ति तो हो, समाजवाद की स्थापना तो हो, लेकिन समाज हमारा वही बना रहे जो आज से १५०० वर्ष पूर्व था या २००० वर्ष पूर्व था, तो वह भ्रम में है। यह चीज टूट जायगी। अगर हम लोग कायर हो कर बैठ गए और सामाजिक क्रान्ति की दिशा में कदम नहीं उठाते तो हम उस राजनैतिक परिवर्तन के बोझ के नीचे टूट

जायंगे जिसे हमने स्वयं अपने माथे पर उठाया है, उस औद्योगिक क्रान्ति के बोझ के नीचे टूट जायेंगे जो देश में बड़े जोरों से हो रही है।

श्रीमन्, अपने धर्म, अपनी संस्कृति और अपने देश पर अनाथ श्रद्धा रखते हुए भी लज्जा के साथ मैं स्वीकार करता हूं कि वैदिक कालीन भारत के बाद, भारत में जो सभ्यता प्रचलित हुई उसमें नारियों के साथ कभी भी न्याय नहीं हुआ। भारत की नारियां सदैव अन्याय भोगती आ रही हैं। (कोलाहल) बन्धु, अपने इतिहास को समझो और जहां उसमें गलतियां हैं उनका सुधार करो। पुरानी बातों को सर पर ढो कर चलने से कोई फायदा नहीं होगा।

श्रीमन्, बुद्धदेव इस देश के बहुत बड़े सांस्कृतिक नेता हुए। बुद्धदेव ने यह कहा कि मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य मोक्ष है और मोक्ष प्राप्त करने का साधन भिक्षु हो जाना है। जब देश की मानवता ने यह बात मान ली तो नारियों में एक खलबली मची कि अगर मोक्ष सर्वश्रेष्ठ ध्येय है और भिक्षु होना सर्वश्रेष्ठ साधन है तो नारियों को भी भिक्षुणी होने का अधिकार दिया जाय। बुद्धदेव यह बात नहीं मान रहे थे। लेकिन, आनन्द के आग्रह से उन्होंने यह आज्ञा दे दी और बुद्धदेव ने फिर विलाप भी किया और कहा "आनन्द, मैंने जो धर्म चलाया था वह पांच सहस्र वर्ष चलने वाला था, लेकिन दुख है कि अब वह ५०० वर्ष चलेगा क्योंकि मैंने नारियों को भिक्षुणी होने का अधिकार दे दिया है।"

दूसरी बात यह है कि जैन मुनियों ने आरम्भ में ही आज्ञा दी कि नारियां भी चाहें तो वे भिक्षुणी हो सकती हैं, उनको भी पुरुषों के समान अधिकार हैं। लेकिन, जब दिगम्बर सम्प्रदाय का जन्म हुआ तब उन्होंने धर्मशास्त्र में संशोधन कर दिया और संशोधन कर के यह बतलाया कि नारियों को मोक्ष नहीं मिल सकता। नारियां दान पुण्य करके अपने घर में बनी रहें। अगले किसी जन्म में जब वे पुरुष हो कर जन्मेंगी तब वे भिक्षु हो सकती हैं। नारी जाति के प्रति यह दूसरा अन्याय था। यह ठीक है कि निर्गुणियां साधु जब आए तब उन्होंने गार्हस्थ्य की महिमा बखानी। जब भी प्रवृत्ति और गार्हस्थ्य का विकास होता है, जब भी प्रवृत्तिवादी दर्शन को उत्थान मिलता है तब गृहस्थों की स्थिति अच्छी होती है और गृहस्थों की स्थिति अच्छी होती है तब नारी की स्थिति भी अच्छी हो जाती है। लेकिन कबीर ने भी वही अन्याय किया। कहते हैं, कबीर साहब ने स्वयं विवाह किया था, लेकिन उनका एक दोहा मिलता है: "नारी तो हमहूं करी, तब ना किया विचार, जब जानी तब परिहरी नारी महा विकार।" यह फिर नारी के साथ छल था। यह क्या बात हुई कि भारतवर्ष के मुनियों ने कभी इस बात को देखा ही नहीं कि नर नारी के परस्पर के जो सम्बन्ध हैं उनकी आधारशिला क्या है? क्यों हम लोग नारी को गाली देते चले आ रहे हैं? यह ठीक है कि संतों, सुधारकों के कारण नारियों की थोड़ी सी तरक्की भी हुई। लेकिन मूलतः वे नारी को अभिशाप बताते गए और नारियों की पद मर्यादा तभी बढ़ी जब भारतवर्ष में प्रवृत्ति का उत्थान हुआ। मैं मानता हूं कि हर्षवर्धन के बाद भारतवर्ष की मृत्यु हो गई या भारतवर्ष सोने को चला गया और उस निद्रा से भारत तब जगा जब यूरोप ने भारत में प्रवेश किया और यूरोपीय संस्कृति के कचोट से भारत की निद्रा टूटी। उन्नीसवीं सदी में जो हमारे सांस्कृतिक सुधारक हुए उनमें से प्रत्येक ने इस बात पर जोर दिया कि हमने नारियों के प्रति अत्याचार किया है। जब तक नारियों की उन्नति नहीं होगी, भारत को सद्गति नहीं मिलेगी, अपने उद्देश्य में वह सफल नहीं होगा। राजा राममोहन राय का नाम लिया गया है। लेकिन इस संबंध में केशवचन्द्र, ईश्वरचन्द्र और विवेकानन्द के भी नाम लिये जाने चाहिएं। भारत के जो सांस्कृतिक सुधारक हुए हैं उनमें गान्धी जी का नाम लिया जाना चाहिए, जवाहर लाल नेहरू का नाम लिया जाना चाहिए, स्वयं आपका नाम इस दिशा में बहुत ही उल्लेखनीय है (हर्षध्वनि) मगर.....

[श्री रामधारी सिंह दिनकर]

एक माननीय सदस्य : अच्छा ।

श्री रामधारी सिंह दिनकर : आप यह न समझिये कि मैं यहां पुरुषों के पक्ष में कहने आया हूं । इस विषय में मैंने व्रत लिया है कि जो कुछ कहना है वह नारी शक्ति के उत्थान के सम्बन्ध में कहूंगा । दूसरी बात कहने के लायक है ही नहीं ।

श्रीमन्, उन्नीसवीं शताब्दी में जो सांस्कृतिक जागरण हुआ, उसमें जो दर्शन, जो सांस्कृतिक साहित्य हमने तैयार किया उसके भीतर से ही नवीन भारतवर्ष का जन्म हुआ है और वह भारतवर्ष उस भारतवर्ष से भिन्न है जो १९वीं सदी तक इस देश में जीवित था। १९वीं सदी का भारतवर्ष और १९ वीं सदी के बाद के भारतवर्ष में सबसे बड़ा भेद यह है कि यह भारतवर्ष नारियों का आदर करने वाला है, यह भारतवर्ष नरों का पक्षपातवादी नहीं है । यह भारतवर्ष तो दलित और उपेक्षित अंगों की उन्नति करना चाहता है, समृद्धि करना चाहता है, उन्हें विकसित करना चाहता है । जो भारतवर्ष उन्नीसवीं सदी के सांस्कृतिक जागरण से जन्म लेकर आया है, देश के सामने यह उन्नत विधेयक उसी का प्रस्ताव है । इसकी आलोचना करने वाले, इस पर उंगली उठाने लोग वे हैं जो अट्ठारहवीं सदी से पहले के भारतवर्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनका जमाना लद चुका है, जिनकी बस छूट चुकी है, जो अपनी यात्रा पर आगे बढ़ने वाले नहीं हैं । भविष्य उन लोगों का है जो इस विधेयक के साथ हैं । जो इस विधेयक के साथ नहीं हैं वे भारतवर्ष की प्रगति को जोर नहीं दे सकेंगे ।

श्री व्य० कृ० डंगे : वाह, वाह ।

श्री रामधारी सिंह दिनकर : मैं समझता हूं कि पुण्य का उदय हो गया कि भाइयों के मुख से जो अच्छी बात निकल गई । इसलिए मैं पूरी शक्ति के साथ इस विधेयक का समर्थन करता हूं और चाहता हूं कि सारा सदन इस पर उस दृष्टि से विचार करे जिस दृष्टि को मैंने सभा के सामने उपस्थित किया है ।

श्री व्य० कृ० डंगे : आपने सक्सेशन पर तो कुछ नहीं कहा ।

श्री पृथ्वीराज कपूर (नामनिर्देशित) : माननीय सभापति महोदय, मैं इस बिल का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं । मुझे एक बात बड़ी विचित्र जान पड़ी कि जो जो भाई इस बिल के बारे में बोलने के लिये खड़े हुये हैं उनमें किसी ने तो यह कहा कि जो नारियों पर अत्याचार होता आया है उसको दूर करने के लिये यह बिल है, किसी ने यह कहा कि पुरुषों जागो, उठो, उनके पुरुषत्व को जगाया, उनकी शिवलरी को उभारा और उनसे कहा कि तुम नारियों पर अहसान करो और कर्तव्य का पालन करो जो तुम्हें करना था, करना है या करना चाहिये नारी के प्रति । हैरत हुई कि यह क्या बात है । यह नारियों का बिल है, किसी ने यह भी कहा । एक देवी ने कहा और बहुत मान्य हैं वे देवी । मैं भी समर्थन करता हूं इस बिल का, लेकिन मैं इसे नारी का बिल नहीं कहता हूं । मैं कहता हूं कि पुरुषों के उद्धार का यह बिल है । यह पुरुषों का बिल है । मैं इस बिल का समर्थन करता हूं लेकिन मैं यह नहीं कहता कि नारी के ऊपर जो अत्याचार हुआ है उसके दूर करने के लिये यह बिल है । आज हमने करवट ली है, हम जागे हैं और मैं यह समझता हूं कि यह पुरुषों के उद्धार के लिये बिल है । वह अत्याचार, जो पुरुषों ने अपनी शिवलरी के मातहत, अपने पुरुषत्व को बहुत जोर से दिखाने के मातहत और भूल में आकर अपने ऊपर किया है, उससे बचाने के लिये यह बिल है । पुरुष ने अपने को बचाने के लिये यह बिल पेश किया है क्योंकि उसने देखा कि एक ऐसे धोखे में, एक ऐसे भ्रम में, पड़कर सदियों से, सेंचुरीज से, उसने अपने ऊपर एक जुल्म किया और अब उस जुल्म से वह अपने आप को छुड़ाना चाहता है, उस जुए को अपने गले से उतारना चाहता है, पुरुष ने नारी को देवी कह कर, मां कह कर, बहन कह कर, पुत्री कह कर पत्नी कह कर,

सहचरी कह कर, अपने बराबर का समझ कर और फिर उसकी पूजा करके उसको एक ऐसी जगह पर ला कर रख दिया कि पुरुष पर तमाम बोझ पड़ा और अब वह उस बोझ को अपने ऊपर से उतारना चाहता है। मेरे एक बड़े अजीज मित्र कवि ने अभी कहा कि मैं कभी भी यह अत्याचार नारियों पर सहन नहीं करूंगा। उनकी उम्र में लोग ऐसा ही करते हैं। बड़ी उम्र में जब पहुंच जाते हैं तो लोग ऐसा ही पुरुषत्व दिखाते हैं। क्यों नहीं कहते कि हम उस बोझे को जो हमने अपने कन्धों पर उठाया था अब और नहीं उठा सकते? क्यों नहीं कहते कि हम उस बोझे से थक गये हैं? क्यों नहीं कहते कि हम उस बोझे से ऊब गये हैं? अब हम उस बोझे को बरदाश्त नहीं कर सकते, अब हम उस लाश को ढो नहीं सकते, हम थक गये हैं, हम हार गये हैं। क्यों नहीं कहते कि ऐ देवियों, तुम्हें देवी मान कर हमने अपना सत्यानाश किया, अब और अपना सत्यानाश करना नहीं चाहते। क्यों नहीं कहते कि तुम्हें बहन मान कर हमने तुम्हारे चरण धोये हैं। बहन के सबने चरण धोने हैं। जब अष्टमी मनाई जाती है तब बहन के चरण धोये जाते हैं। अब आप चरण धोने से बच जायेंगे, आपकी जान छूट जायगी। अभी तक बीवी आराम से घर में बैठी रहती थी, अगर पुरुष तहसीलदार बना, तो वह तहसीलदारनी बन गई, अगर वह डाक्टर बना तो वह डाक्टरनी बन गई, यहां तक कि वह जो कुछ बना वह अपने आप वह बन गई। अब पुरुष इससे ऊब गया है, इससे थक गया है। इसी लिये अब परिवर्तन हो रहा है, समय बदल रहा है, नया उजाला हो रहा है, किसी बहाने, किसी रूप में इस जुए को अपने गले से उतार कर फेंको, अपनी जान छुड़ाओ। जान बची, लाखों पाये और खैर से बुद्धू घर को आये। जान छुड़ाने के बहाने यह मत कहिये कि आप नारियों पर अहसान कर रहे हैं और न उन्हें आप इतना बेवकूफ समझिये कि वे आप की इस बात को मान लेंगी। अगर उनमें से कुछ अपने को बेवकूफ समझती हैं तो हम उनका स्वागत करते हैं। अगर वे यह समझती हैं कि यह उनके उद्धार का बिल है, तो ठीक है। कल तक जब तुम बहन के रूप में आती थीं, तो मां कहती थी कि तुम्हारी बहन आई है और जब वह मायके आई है तो उसका सम्मान कर, उसका स्वागत कर, उसको पूज, और जब वह जाने लगे तो उसको यह दे, वह दे। पास में न हो, पल्ले में न हो, जेब में न हो तो उधार ला, कहीं से ला, एडवांस ला, पार्लियामेंट की तनख्वाह नहीं मिली है तो गलत बिल बना कर ला और बहन को दे और वह देता था। कल से तुम्हारी जान बचने वाली है। इस लिये खुश हो और औरतों को धोखे में न रखो। वे धोखे में रखते हैं जो यह कहते हैं कि हम औरतों पर अहसान करते हैं। आप उन पर अहसान नहीं कर रहे हैं बल्कि आप उनके गले में एक बहुत बड़ा जुआ डालना चाहते हैं। इस लिये ऐ पुरुषो, तुम जागो, स्त्रियां तो सदा ही जगी हुई थीं। हां, कहीं कहीं चन्द बेवकूफ मर्दों ने इसका नाजायज फायदा उठाया, अपने मर्द न होने का सबूत दिया, अपनी बेवकूफी और अपनी जहालत का सबूत दिया, उन्होंने मर्दों के नाम पर एक कलंक का टीका लगाया। उनकी वजह से बहुत से लोगों को शर्मिन्दगी उठानी पड़ी, लेकिन यह दूसरी बात है। सही बात यह थी कि नारी का जो स्थान इस सभ्यता में चला आता था वह बहुत ऊंचा स्थान था और आज भी है। कोई भी यज्ञ या शुभ कार्य नहीं हो सकता जब तक कि आपकी बीवी आपके साथ न बैठे और साथ साथ गांठ न बांधे। अगर बीवी से लड़ाई हो गई हो, फिर भी उस समय उसे मनाना पड़ता है। लोग पूछते हैं, दोस्त पूछते हैं कि बेटे की शादी में क्या कर रहे हो। तो यह जवाब मिलता है कि पता नहीं, बीवी से पूछ लें क्योंकि उसकी हुकूमत है। अब आप उससे उसकी हुकूमत छीनना चाहते हैं। आज पुरुष उसकी हुकूमत से निकलना चाहता है, उसके बोझ को अपने ऊपर से उतारना चाहता है, फिर भी खम ठोंक कर मैदान में आता है और कहता है कि मैं तो बड़ा अहसान कर रहा हूं। औरतो, भूलो नहीं, यह अहसान नहीं हो रहा है, यह तुम्हारे गले में बहुत बड़ी चक्की डाली जा रही है जिस पर एक सोने का छोटा सा पत्तरा लगा दिया गया है। एक

[श्री पृथ्वीराज कपूर]

बार एक पुरुष ने एक स्त्री से कहा कि यह पंसेरी उठा दो। उस पर उस स्त्री ने कहा कि मैं नहीं उठा पाऊंगी। दूसरे दिन उस पुरुष ने उस पंसेरी पर एक छोटा सा सोने का पत्तरा जड़वा दिया और उसमें सोने का पत्तर मढ़ी हुई लोहे की जंजीर डलवा कर ले आया। फिर उस स्त्री ने उस पंसेरी को उठाकर अपने गले में डाल लिया। उसी तरह स्त्री पर यह बोझ डाल कर यह कहा जा रहा है कि हम तुम पर अहसान कर रहे हैं हम तुम्हें यह सोने का उपहार दे रहे हैं।

मैं तो इस बिल का इस लिये समर्थन कर रहा हूं क्यों कि इससे मर्दों का उद्धार होगा और मर्द मुक्त हो कर और ज्यादा काम कर सकेंगे। बहुत सी झूठी और फरेब की बातों में मर्द फंसे हुये थे और अब वे उससे निकल सकेंगे। मैं इस बिना पर इस बिल का समर्थन नहीं कर रहा हूं कि हम औरतों पर कोई अहसान कर रहे हैं। जो आज बड़ी शिवलरी दिखा रहे हैं, बड़ी बहादुरी दिखा रहे हैं और यह कह रहे हैं कि यह स्त्रियों का हक है, इस लिये उनको मिलना चाहिये, वे यह हक इस लिये नहीं दे रहे हैं कि वे कोई हक देना चाहते हैं बल्कि वे इस बोझ से थक गये हैं, ऊब गये हैं और अब वे अपने में उतनी क्षमता नहीं पाते, उतनी ताकत नहीं पाते जितनी कि एक भाई में होनी चाहिये थी, एक पति में होनी चाहिये थी, एक पुत्र में होनी चाहिये थी। वे अपने आप में शक्ति नहीं पाते हैं और अब अपनी कमजोरी को छिपाते हैं। उसको एक नया रूप देकर यह कहते हैं कि हम तुम पर अहसान कर रहे हैं, हम तुम्हें बराबर का हक दे रहे हैं। यह क्यों नहीं कहते कि हम तुम्हें मुसीबतें दे रहे हैं। यह क्यों नहीं कहते कि हम तुम से तुम्हारी सब रंगीनियां छीन कर तुम को एक भाई का टट्टू बना देंगे, तुमसे काम लेंगे। अब तुम्हें भी काम करना पड़ेगा, और तुम्हें भी हमारी तरह फटा पुराना कपड़ा पहनना पड़ेगा। तुम्हें भी अब हमारी तरह मेहनत मजदूरी करनी पड़ेगी। तुम्हें भी हमारी तरह वक्त पर काम पर जाना पड़ेगा। अगर तुम बीमार होगी और तुम्हारी बीमारी की छुट्टी नहीं बाकी होगी तब भी तुम्हें काम करना होगा। तुम्हें बुखार होगा तब भी तुम काम करोगी। इस तरह हम यह जुआ तुम्हारे गले में डालना चाहते हैं, हम अहसान नहीं कर रहे हैं। आप यह साफ कहिये कि हम इस बात का एतराफ करते हैं कि हमसे अब यह काम नहीं हो सकता, आधा तुम कमाओ, आधा हम कमायें तब काम चलेगा। आप खुले लफ्जों में कहिये कि अब हम इस बोझ को नहीं उठा सकते। सच्चाई को सामने रखते हुये आप कहिये कि देवियो, आओ हमारे साथ काम करो, हमारे साथ आगे आओ। आज दुनिया में बहुत तब्दीली हो गई है, मशीनों से दुनिया में बहुत फर्क आ गया है, बहुत से खर्चे बढ़ गये हैं। मर्द फिर भी मोटा खसोटा पहनता है। औरतों को देखिये, हर एक के ऊपर सिल्क रहती है, हर एक जेवर पहनती है। लेकिन मर्दों की बुरी हालत है। आप अपनी सूरतें देखिये तब पता लगेगा। लेकिन कल से सब मर्द हसीन हो जाने वाले हैं। इस लिये हम इसे मर्दों का बिल कहें और इसका स्वागत करें और यह कहें कि हम बेटे नहीं

5 P.M. बन सकते हम भाई नहीं बन सकते। हम हार गये हैं और चाहते हैं कि बराबर में आ कर वह भी इस बोझ को उठायें और ले कर चलें।

सरदार रघुबीर सिंह पंजहजारी (पेप्सू) : पति तो नहीं बन सकते ?

श्री पृथ्वीराज कपूर : पति बनने के लायक होते तो फिर बात ही क्या थी।

तो हम चाहते हैं कि यह कहें कि आओ मिल कर इस बोझ को उठायें। आज दुनिया बहुत जोरों से आगे बढ़ रही है, खर्च बढ़ गया है, अखराजात बढ़ गये हैं, क्योंकि सिनेमा भी देखना है, यह भी करना है, वह भी करना है, पार्टियां भी देनी हैं और हर चीजें

करनी हैं, मोटर कार भी चाहिये, शाम के वक्त इधर उधर के और हंगामे हैं, किसी को बुलाना हैं, किसी के घर जाना हैं । इसलिये यह बहुत जरूरी हैं कि जो खर्च बढ़ गया हैं उसको किसी तरह से पूरा करें और उसके लिये ही यह सब किया जा रहा हैं । इसलिये हमें साफ साफ कहना चाहिये कि उठो, काम करो और बोझा उठाओ । सच्ची बात को हमें कहना चाहिये ।

(समय की घंटी)

बस इतना हीं कह कर मैं इसका समर्थन करता हूं और कहता हूं कि हम इस सच्चाई को मानें कि यह चीज हम अपनी भलाई के लिये कर रहे हैं ।

MR. CHAIRMAN: The House stands adjourned till 11 A.M. tomorrow.

The House adjourned at two minutes past five of the clock till eleven of the clock on Tuesday the 22nd November 1955.